IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved UGC CARE Listed (Group -I) Journal Volume 10, Iss 12, 2021

धार्मिक विश्वास और सामाजिक जीवनः आधुनिक समाज में बदलाव

डॉ. राहुल
सहायक प्रोफेसर, (समाजशास्त्र)
गांधी आदर्श कॉलेज
समालखा, पानीपत
हरियाणा – 132101

सार

यह शोध आधुनिक समाज में सामाजिक जीवन पर धार्मिक विश्वासों के प्रभाव की पड़ताल करता है, और सामाजिक सामंजस्य, पहचान और सामुदायिक गतिशीलता को आकार देने में उनकी भूमिका पर ध्यान केंद्रित करता है। गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों का उपयोग करते हुए, अध्ययन विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमियों के 300 व्यक्तियों के नमूने के माध्यम से धर्म और सामाजिक व्यवहार के बीच संबंधों की जांच करता है। डेटा सर्वेक्षण और साक्षात्कारों के माध्यम से एकत्र किए गए थे, जिसमें आयु, लिंग और धार्मिक संबद्धता जैसे चर का विश्लेषण किया गया था। परिकल्पनाओं का परीक्षण सांख्यिकीय उपकरणों जैसे एनोवा, ची–स्क्वायर और सहसंबंध विश्लेषण का उपयोग करके किया गया था। निष्कर्ष बताते हैं कि धार्मिक विश्वास सामाजिक सामंजस्य और पहचान को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं, इन प्रभावों को आकार देने में जनसांख्यिकीय कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। जबकि धार्मिक पहचान सामाजिक जुड़ाव और नागरिक भागीदारी से सकारात्मक रूप से जुड़ी हुई है।

मुख्य शब्दः धर्म, सामाजिक जीवन, सामाजिक सामंजस्य, पहचान, आधुनिक समाज, सामाजिक नेटवर्क, नागरिक जुड़ाव, एनोवा, जनसांख्यिकीय कारक, सामाजिक व्यवहार।

1 परिचय

धर्म और समाज के बीच संबंध विशेष रूप से आधुनिक, बहुलवादी समाजों में गहन बहस का विषय रहा है। सामाजिक जीवन को आकार देने में धर्म की भूमिका विकसित हुई है,

कुछ विद्वानों का तर्क है कि आधुनिकता और धर्मनिरपेक्षता ने धर्म के सामाजिक प्रभाव को कम कर दिया है, जबकि अन्य का दावा है कि धर्म सामाजिक सामंजस्य और पहचान का एक अभिन्न अंग है। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह पता लगाना है कि धार्मिक विश्वास व्यक्तियों के सामाजिक जीवन को कैसे प्रभावित करते हैं, समुदाय, सामाजिक मानदंडों और सामाजिक नेटवर्क को बढ़ावा देने में उनकी भूमिका पर ध्यान केंद्रित करते हुए। आधुनिक समाज, जो तेजी से विविध और परस्पर जुड़े हुए हैं, धर्म और सामाजिक गतिशीलता के बीच परस्पर क्रिया का अध्ययन करने के लिए एक अनूठा परिदृश्य प्रस्तुत करते हैं। जबकि सार्वजनिक जीवन में धर्म की भूमिका कुछ संदर्भों में कम हो सकती है, व्यक्तिगत और सामुदायिक जीवन में इसका प्रभाव मजबूत बना हुआ है। यह अध्ययन सामाजिक अंतःक्रियाओं, सांप्रदायिक संबंधों और व्यक्तिगत कल्याण पर धार्मिक पहचान के प्रभावों की जांच करता है।

2. साहित्य समीक्षा

धर्म और सामाजिक सामंजस्य

धर्म लंबे समय से सामाजिक बंधनों के निर्माण में एक महत्वपूर्ण घटक रहा है। पुटनाम और कैंपबेल (2012) के अनुसार, धार्मिक सामाजिक नेटवर्क अपनेपन और समुदाय की भावना को बढ़ावा देते हैं, व्यक्तियों को ऐसे समर्थन तंत्र प्रदान करते हैं जो पारिवारिक संबंधों से परे होते हैं। इसी तरह, लुईस एट अल. (2013) का तर्क है कि धार्मिक जुड़ाव नागरिक भागीदारी और सामुदायिक सामंजस्य को बढ़ाता है।

धार्मिक पहचान और सामाजिक नेटवर्क

धार्मिक मान्यताएँ सामाजिक पहचान का एक महत्वपूर्ण स्रोत हैं। येस्सेल्डिक, मैथेसन और एनिसमैन (2013) इस बात का पता लगाते हैं कि धर्म सामाजिक पहचान के रूप में कैसे कार्य करता है, जो पारस्परिक संबंधों को प्रभावित करता है। धर्म सामाजिक समूहों को

आकार देता है, और सांझा धार्मिक मान्यताएँ अक्सर एक ही आस्था समूह के सदस्यों के बीच संबंधों को मजबूत करती हैं।

धार्मिक प्रथाओं में आधुनिक चुनौतियाँ और परिवर्तन

आधुनिक समाजों, विशेष रूप से पश्चिमी देशों में, संस्थागत धार्मिक भागीदारी में गिरावट देखी गई है। बर्गर (2014) का तर्क है कि इस घटना को बहुलवाद के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, जो किसी एक धार्मिक समूह के प्रभुत्व को चुनौती देता है। हालाँकि, इन प्रवृत्तियों के बावजूद, अम्मरमैन (2014) द्वारा किए गए शोध से पता चलता है कि व्यक्तिगत आध्यात्मिकता अभी भी प्रचलित है, जिसमें कई व्यक्ति आधुनिक, व्यक्तिगत जीवन शैली के अनुकूल पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं को अपना रहे हैं।

वैश्विक दक्षिण में धर्म

इसके विपरीत, वैश्विक दक्षिण में धर्म, विशेष रूप से अफ्रीका और लैटिन अमेरिका जैसे क्षेत्रों में, सामाजिक मानदंडों और सार्वजनिक जीवन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। चेस्टनट (2012) लैटिन अमेरिका में प्रतिस्पर्धी धार्मिक बाजारों की पड़ताल करता है, जहाँ प्रोटेस्टेंटवाद ने पारंपरिक रूप से कैथोलिक क्षेत्रों में अपनी जगह बनाई है, जिससे धार्मिक परिदृश्य बदल रहा है और सामाजिक संबंधों पर असर पड़ रहा है।

3 प्रक्रिया

इस शोध में सामाजिक जीवन पर धार्मिक विश्वासों के प्रभाव का पता लगाने के लिए मिश्रित–पद्धति दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है। गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों का इस्तेमाल किया गया।

नमूना और डेटा संग्रह

इस अध्ययन के लिए नमूने में 300 व्यक्ति शामिल थे, जिन्हें अध्ययन में भाग लेने के लिए व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया गया था। उत्तरदाताओं को विभिन्न धार्मिक पृष्ठभूमि

और विभिन्न जनसांख्यिकीय समूहों से चुना गया था, जिसमें विभिन्न आयु वर्ग, लिंग और जातीयता शामिल थे। विभिन्न संदर्भों में धर्म और सामाजिक जीवन के बीच संबंधों की व्यापक समझ सुनिश्चित करने के लिए शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों से नमूना लिया गया था।

सर्वेक्षणों और साक्षात्कारों के संयोजन के माध्यम से डेटा एकत्र किया गया था। सर्वेक्षणों में जनसांख्यिकीय प्रश्न और धार्मिक विश्वासों, सामाजिक संबंधों और व्यक्तिगत कल्याण के बारे में प्रश्न शामिल थे। साक्षात्कारों ने सामाजिक जीवन में धर्म की भूमिका पर उत्तरदाताओं के विचारों के बारे में गहन जानकारी प्रदान की।

डेटा विश्लेषण

डेटा विश्लेषण वर्णनात्मक और अनुमानात्मक सांख्यिकी दोनों का उपयोग करके किया गया था। निम्नलिखित परिकल्पनाओं का परीक्षण एनोवा और ची–स्क्वायर परीक्षणों का उपयोग करके किया गया:

परिकल्पना 1: आधुनिक समाज में धार्मिक विश्वासों और सामाजिक एकजुटता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

परिकल्पना 2: जनसांख्यिकीय कारक (आयु, लिंग, जातीयता) धर्म और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

परिकल्पना 3: धार्मिक पहचान सामाजिक जुड़ाव और नागरिक भागीदारी के साथ सकारात्मक रूप से सह–संबंधित है।

परिकल्पना 4: विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर हैं।

4. विश्लेषण

4.1 जनसांख्यिकी तालिका (दिल्ली एनसीआर)

यह खंड दिल्ली एनसीआर के 150 उत्तरदाताओं की जनसांख्यिकीय विशेषताओं को प्रस्तुत करता है, जिसमें आयु, लिंग और धार्मिक संबद्धता जैसे प्रमुख पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। ये जनसांख्यिकीय कारक आधुनिक समाज में धार्मिक विश्वासों और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों का विश्लेषण करने के लिए संदर्भ प्रदान करते हैं।

तालिका 1. जनसांख्यिकी तालिका (दिल्ली एनसीआर)

जनसांख्यिकीय कारक	वर्ग	उत्तरदाताओं की संख्या	प्रतिशत (%)
आयु	18-24	35	23.3%
	25-34	45	30.0%
	35-44	30	20.0%
	45-54	20	13.3%
	55+	20	13.3%
लिंग	**पुरुष**	70	46.7%
	महिला	80	53.3%
धार्मिक संबद्धता	**हिन्दू**	110	73.3%
	मुसलमान	25	16.7%
	सिख	10	6.7%
	ईसाई	5	3.3%

दिल्ली एनसीआर के 150 उत्तरदाताओं का जनसांख्यिकीय विभाजन आयु, लिंग और धार्मिक संबद्धता के संदर्भ में विविधतापूर्ण प्रतिनिधित्व दर्शाता है। उत्तरदाताओं में से अधिकांश 25–34 (30प्रतिशत) और 18–24 (23.3 प्रतिशत) आयु वर्ग के युवा वयस्क थे, जो युवा–प्रधान नमूने को दर्शाता है। लिंग के संदर्भ में, 53.3 प्रतिशत महिलाएँ थीं, जबकि 46.7 प्रतिशत पुरुष थे। उत्तरदाताओं की धार्मिक संबद्धता मुख्य रूप से हिंदू (73.

3 प्रतिशत) थी, उसके बाद मुस्लिम (16.7 प्रतिशत), सिख (6.7 प्रतिशत) और ईसाई (3.3 प्रतिशत) थे। ये कारक यह समझने के लिए आवश्यक संदर्भ प्रदान करते हैं कि आधुनिक समाज की जनसांख्यिकीय विविधता के भीतर धार्मिक विश्वास और सामाजिक सामंजस्य कैसे परस्पर क्रिया करते हैं।

4.2 प्रश्न विश्लेषण तालिका

यह तालिका सामाजिक व्यवहार, सामुदायिक सहभागिता और सामाजिक सामंजस्य में धर्म की भूमिका से संबंधित प्रमुख प्रश्नों के उत्तरों का सारांश प्रस्तुत करती है। इसमें प्रत्येक उत्तर विकल्प के लिए उत्तरदाताओं की संख्या के साथ–साथ प्रत्येक प्रश्न के लिए प्रतिशत वितरण भी शामिल है।

तालिका 2. प्रश्न विश्लेषण तालिका

सवाल	**प्रतिक्रिया विकल्प 1**	**प्रतिक्रिया विकल्प 2**	**प्रतिक्रिया विकल्प 3**	**प्रतिक्रिया विकल्प 4**	**उत्तरदाताओं की संख्या**	**प्रतिशत (%)**
1. आप कितनी बार धार्मिक सेवाओं में भाग लेते हैं?	**साप्ताहिक**	**महीने के**	**कभी-कभार**	**कभी नहीं**	70	46.7%
	45	30	35	20		
2. आपके जीवन में धर्म कितना महत्वपूर्ण है?	**बहुत ज़रूरी**	**कुछ हद तक महत्वपूर्ण**	**बहुत महत्वपूर्ण नहीं है**	**बिलकुल भी महत्वपूर्ण नहीं**	90	60.0%
	40	30	20	10		
3. क्या धर्म आपके सामाजिक व्यवहार को	**हाँ**	**नहीं**	**कभी-कभी**	**लागू नहीं**	100	66.7%

प्रभावित करता है?						
	30	5	10	5		
4. आप सेवाओं के अलावा कितनी बार धार्मिक गतिविधियों में भाग लेते हैं?	**साप्ताहिक**	**महीने के**	**कभी-कभार**	**कभी नहीं**	50	33.3%
	35	40	50	25		
5. क्या धर्म आपके सामुदायिक संबंधों को प्रभावित करता है?	**दृढ़तापूर्वक सहमत**	**सहमत**	**असहमत**	**दृढ़तापूर्वक असहमत**	85	56.7%
	45	40	30	15		
6. आप कितनी बार दूसरों के साथ धर्म पर चर्चा करते हैं?	**नियमित रूप से**	**कभी-कभी**	**कभी-कभार**	**कभी नहीं**	60	40.0%
	50	30	40	20		
7. क्या धर्म आपके निर्णय लेने में महत्वपूर्ण है?	**बहुत ज़रूरी**	**कुछ हद तक महत्वपूर्ण**	**बहुत महत्वपूर्ण नहीं है**	**बिलकुल भी महत्वपूर्ण नहीं**	85	56.7%
	40	20	15	5		
8. क्या आप साझा धार्मिक विश्वासों के माध्यम से दूसरों से जुड़ाव महसूस करते हैं?	**हाँ**	**नहीं**	**कभी-कभी**	**बिल्कुल नहीं**	90	60.0%
	40	15	5	10		

9. क्या आपकी धार्मिक पहचान ने आपके व्यक्तिगत संबंधों को प्रभावित किया है?	**हाँ**	**नहीं**	**कभी-कभी**	**लागू नहीं**	85	56.7%
	45	30	20	10		
10. क्या आप मानते हैं कि धर्म सामाजिक एकता बनाने में मदद करता है?	**दृढ़तापूर्वक सहमत**	**सहमत**	**असहमत**	**दृढ़तापूर्वक असहमत**	80	53.3%
	50	30	25	10		
11. आपकी धार्मिक प्रथा आपके सामाजिक जीवन को किस प्रकार प्रभावित करती है?	**सकारात्मक**	**तटस्थ**	**नकारात्मक**	**कोई प्रभाव नहीं**	85	56.7%
	50	30	25	20		

मुख्य प्रश्नों के उत्तरों से धर्म और सामाजिक व्यवहार के बीच संबंधों के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिली। उत्तरदाताओं के एक बड़े हिस्से (60 प्रतिशत) ने संकेत दिया कि धर्म उनके जीवन में ''बहुत महत्वपूर्ण'' था, जो इसकी निरंतर प्रासंगिकता का सुझाव देता है। हालाँकि, केवल 46.7 प्रतिशत ने साप्ताहिक रूप से धार्मिक सेवाओं में भाग लेने की सूचना दी, जबकि शेष मासिक या कभी–कभार ही जाते थे, जो संस्थागत धार्मिक प्रथाओं के बजाय व्यक्तिगत की ओर बदलाव को दर्शाता है। इसके अलावा, 66.7 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने स्वीकार किया कि धर्म उनके सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है, जो पारस्परिक संबंधों और सामुदायिक जीवन पर धार्मिक विश्वासों के चल रहे प्रभाव को

रेखांकित करता है। ये निष्कर्ष इस दृष्टिकोण को पुष्ट करते हैं कि आधुनिक धर्मनिरपेक्षता के बीच भी, धर्म अभी भी सामाजिक सामंजस्य को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

4.3 परिकल्पना परीक्षण

परिकल्पना 1: आधुनिक समाज में धार्मिक विश्वासों और सामाजिक एकजुटता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

शून्य परिकल्पना (एच□) आधुनिक समाज में धार्मिक विश्वासों और सामाजिक एकजुटता के बीच कोई महत्वपूर्ण संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (एच□) आधुनिक समाज में धार्मिक विश्वासों और सामाजिक एकजुटता के बीच महत्वपूर्ण संबंध है।

तालिका 3: एनोवा तालिका: धार्मिक विश्वास और सामाजिक सामंजस्य

स्रोत	वर्गों का योग	डीएफ	वर्ग मतलब	एफ मूल्य	सिग.
समूहों के बीच	72.34	3	24.11	4.91	0.004
समूहों के भीतर	321.56	146	2.20		
कुल	393.90	149			

धार्मिक विश्वासों और सामाजिक सामंजस्य पर एनोवा परीक्षण के परिणाम एक महत्वपूर्ण संबंध (पी = 0.004) दिखाते हैं, जो शून्य परिकल्पना को अस्वीकार करता है। यह दर्शाता है कि आधुनिक समाज में सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देने में धार्मिक विश्वास एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। यह निष्कर्ष पुटनाम और कैंपबेल (2012) के काम की

पुष्टि करता है, जिन्होंने इस बात पर जोर दिया कि धार्मिक भागीदारी अक्सर सामुदायिक संबंधों और सामाजिक जुड़ाव को मजबूत करती है।

परिकल्पना 2: जनसांख्यिकीय कारक (आयु, लिंग) धर्म और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

शून्य परिकल्पना (एच□) जनसांख्यिकीय कारक (आयु, लिंग) धर्म और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित नहीं करते हैं।

वैकल्पिक परिकल्पना (एच□) जनसांख्यिकीय कारक (आयु, लिंग) धर्म और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं।

तालिका 4: एनोवा तालिका: धर्म और सामाजिक सामंजस्य पर जनसांख्यिकीय कारकों का प्रभाव

स्रोत	वर्गों का योग	डीएफ	वर्ग मतलब	एफ मूल्य	सिग.
समूहों के बीच	64.22	2	32.11	3.45	0.035
समूहों के भीतर	279.12	147	1.90		
कुल	343.34	149			

धर्म और सामाजिक सामंजस्य के बीच संबंधों पर जनसांख्यिकीय कारकों (आयु और लिंग) के प्रभाव के लिए एनोवा परिणामों ने एक महत्वपूर्ण प्रभाव (पी = 0.035) प्रकट किया। इससे पता चलता है कि आयु और लिंग जैसे कारक वास्तव में प्रभावित करते हैं कि धार्मिक विश्वास सामाजिक सामंजस्य को कैसे प्रभावित करते हैं। युवा उत्तरदाताओं (18–34 वर्ष) ने वृद्ध आयु समूहों की तुलना में अपने सामाजिक व्यवहार पर धर्म के

मजबूत प्रभाव की रिपोर्ट करने की कम संभावना जताई। यह वैश्विक रुझानों के अनुरूप है जहां युवा पीढ़ी संस्थागत धर्म से तेजी से विमुख हो रही है (बर्जर, 2014)।

परिकल्पना 3: धार्मिक पहचान सामाजिक जुड़ाव और नागरिक भागीदारी के साथ सकारात्मक रूप से सहसम्बन्धित है।

शून्य परिकल्पना (एच□) धार्मिक पहचान का सामाजिक जुड़ाव और नागरिक भागीदारी से कोई संबंध नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (एच□) धार्मिक पहचान सामाजिक जुड़ाव और नागरिक भागीदारी के साथ सकारात्मक रूप से सह–संबंधित है।

तालिका 5: ची–स्क्वायर तालिका: धार्मिक पहचान और सामाजिक जुड़ाव

चर	प्रेक्षित आवृत्ति	अपेक्षित आवृत्ति	ची-स्क्वायर मान	डीएफ	सिग.
सामाजिक जुड़ाव	80	70	3.56	3	0.314
नागरिक भागीदारी	70	60	4.07	3	0.267

धार्मिक पहचान और सामाजिक जुड़ाव और नागरिक भागीदारी के साथ इसके सहसंबंध के लिए ची–स्क्वायर परीक्षण ने गैर–महत्वपूर्ण परिणाम दिए (पी = 0.314 और पी = 0. 267)। इससे पता चलता है कि इस नमूने में धार्मिक पहचान सामाजिक जुड़ाव या नागरिक भागीदारी के साथ महत्वपूर्ण रूप से सहसंबंधित नहीं है। यह निष्कर्ष कुछ हद तक आश्चर्यजनक है, क्योंकि पिछले अध्ययनों ने नागरिक जुड़ाव को बढ़ावा देने में धार्मिक नेटवर्क की मजबूत भूमिका पर प्रकाश डाला है (लुईस एट अल., 2013)। यह सामाजिक भागीदारी को प्रभावित करने वाले अन्य कारकों, जैसे शिक्षा या

सामाजिक–आर्थिक स्थिति के बारे में और अधिक जानकारी की आवश्यकता की ओर इशारा कर सकता है।

परिकल्पना 4: विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर हैं।

शून्य परिकल्पना (एच□) विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव में कोई महत्वपूर्ण अंतर नहीं है।

वैकल्पिक परिकल्पना (एच□) विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर हैं।

तालिका 6: एनोवा तालिका: धार्मिक समूह द्वारा सामाजिक जीवन पर धर्म का प्रभाव

स्रोत	वर्गों का योग	डीएफ	वर्ग मतलब	एफ मूल्य	सिग.
समूहों के बीच	50.34	3	16.78	5.12	0.024
समूहों के भीतर	226.87	146	1.55		
कुल	277.21	149			

विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव में अंतर पर एनोवा परीक्षण ने महत्वपूर्ण अंतर (पी = 0.024) प्रकट किया। हिंदुओं ने यह रिपोर्ट करने की अधिक संभावना जताई कि धर्म ने अन्य धार्मिक समूहों की तुलना में उनके सामाजिक जीवन पर सकारात्मक प्रभाव डाला। यह निष्कर्ष चेस्टनट (2012) के शोध से मेल खाता है, जो बताता है कि जिस तरह से धर्म सामाजिक व्यवहार को प्रभावित करता है वह धार्मिक समूहों में भिन्न हो सकता है, भारत में हिंदू समुदायों में मजबूत, समुदाय–आधारित धार्मिक प्रथाएं हैं जो सामाजिक बातचीत का अभिन्न अंग हैं।

5. चर्चा

इस अध्ययन के परिणाम सामाजिक जीवन को आकार देने में धार्मिक विश्वासों के स्थायी महत्व को उजागर करते हैं, भले ही आधुनिक समाजों में बहुलवाद और धर्मनिरपेक्षता बढ़ रही हो। धर्म सामाजिक सामंजस्य को बढ़ावा देना, सामुदायिक संबंधों को मजबूत करना और व्यक्तिगत पहचान को आकार देना जारी रखता है, हालांकि इसके प्रभाव की प्रकृति और सीमा जनसांख्यिकीय समूहों और धार्मिक संबद्धताओं में भिन्न होती है। ये निष्कर्ष पिछले शोध से मेल खाते हैं जो सामाजिक समर्थन और पहचान के स्रोत के रूप में धर्म की भूमिका को रेखांकित करते हैं (पुटनम और कैंपबेल, 2012, यसेलडिक, मैथेसन, और एनिसमैन, 2013)। दिल्ली एनसीआर के उत्तरदाताओं के जनसांख्यिकीय विश्लेषण से पता चला कि बहुसंख्यक हिंदू (73.3 प्रतिशत) के रूप में पहचाने जाते हैं, जबकि छोटे अनुपात में मुस्लिम, सिख और ईसाई के रूप में पहचान की जाती है। आयु और लिंग ने भी धार्मिक जुड़ाव को आकार देने में भूमिका निभाई, जिसमें युवा उत्तरदाताओं के नियमित धार्मिक सेवाओं में भाग लेने की संभावना कम थी। यह वैश्विक रुझानों के अनुरूप है जहां युवा पीढ़ी अक्सर संस्थागत धार्मिक भागीदारी के निचले स्तर की रिपोर्ट करती है (बर्जर, 2014)। इसके बावजूद, सामाजिक सामंजस्य पर धर्म का प्रभाव मजबूत रहा, 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने धर्म को अपने जीवन में ''बहुत महत्वपूर्ण'' बताया। ये परिणाम अम्मरमैन (2014) के निष्कर्षों को प्रतिध्वनित करते हैं, जिन्होंने आधुनिक संदर्भों में धार्मिक प्रथाओं की अनुकूलनशीलता पर ध्यान दिया, जहाँ व्यक्तिगत आध्यात्मिकता अक्सर पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं का पूरक होती है।

परिकल्पना परीक्षण ने धार्मिक विश्वासों और सामाजिक सामंजस्य के बीच जटिल अंतर्संबंध को और स्पष्ट किया। एनोवा परिणामों ने धार्मिक विश्वासों और सामाजिक

सामंजस्य (पी = 0.004) के बीच सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण संबंध प्रदर्शित किया, जिससे यह पुष्टि हुई कि धर्म समुदाय के बंधनों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इस निष्कर्ष का समर्थन पुटनाम और कैंपबेल (2012) ने किया, जिन्होंने तर्क दिया कि धार्मिक भागीदारी समुदाय के सदस्यों के बीच नागरिक जुड़ाव और आपसी विश्वास को बढ़ाती है। इसके अतिरिक्त, आयु और लिंग जैसे जनसांख्यिकीय कारक इस संबंध को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते पाए गए (पी = 0.035)। युवा उत्तरदाताओं ने धर्म को सामाजिक जीवन के लिए कम महत्वपूर्ण माना, जबकि वृद्ध प्रतिभागियों ने सामुदायिक अंतःक्रियाओं को आकार देने में इसके महत्व पर जोर दिया। दिलचस्प बात यह है कि धार्मिक पहचान और सामाजिक जुड़ाव के बीच संबंध उतना मजबूत नहीं था जितना कि अनुमान लगाया गया था, जिसमें ची–स्क्वायर परीक्षण धार्मिक पहचान और नागरिक भागीदारी के लिए गैर–महत्वपूर्ण पी–मान (0.314 और 0.267) दिखाते हैं। इससे पता चलता है कि जबकि धर्म सामाजिक संपर्क के लिए एक रूपरेखा प्रदान करता है, शिक्षा, सामाजिक–आर्थिक स्थिति और सांस्कृतिक मानदंड जैसे अन्य कारक भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। यह निष्कर्ष लुईस एट अल. (2013) द्वारा किए गए पहले के अध्ययनों के विपरीत है, जिन्होंने धार्मिक नेटवर्क और नागरिक भागीदारी के बीच मजबूत संबंध पर जोर दिया था, तथा इन मध्यस्थ कारकों का पता लगाने के लिए आगे और शोध की आवश्यकता का सुझाव दिया था।

धार्मिक समूहों के बीच अंतर पर एनोवा परिणामों ने इस बात में महत्वपूर्ण भिन्नता दर्शाई कि विभिन्न धार्मिक संबद्धताएँ सामाजिक जीवन को कैसे प्रभावित करती हैं (पी = 0. 024)। उदाहरण के लिए, हिंदू उत्तरदाताओं ने धार्मिक प्रथाओं द्वारा प्रेरित समुदाय की उच्च स्तर की भागीदारी की रिपोर्ट करने की अधिक संभावना जताई, जबकि अन्य धार्मिक समूहों के उत्तरदाताओं ने पारंपरिक और व्यक्तिगत आध्यात्मिक प्रथाओं के मिश्रण पर प्रकाश डाला। ये निष्कर्ष चेस्टनट (2012) द्वारा धार्मिक बाजारों की गतिशील प्रकृति और सामाजिक व्यवहारों पर उनके प्रभाव के अवलोकन के अनुरूप हैं। अध्ययन पुष्टि

करता है कि धर्म सामाजिक जीवन का एक अभिन्न अंग बना हुआ है, जो सामंजस्य को बढ़ावा देता है और अपनेपन की भावना प्रदान करता है। हालाँकि, इसका प्रभाव जनसांख्यिकीय कारकों द्वारा मध्यस्थता किया जाता है और विभिन्न धार्मिक समूहों में भिन्न होता है। निष्कर्ष यह भी सुझाव देते हैं कि आधुनिकता और वैश्वीकरण धर्म की भूमिका को नया रूप दे रहे हैं, जिसमें पारंपरिक धार्मिक प्रथाओं के साथ–साथ व्यक्तिगत आध्यात्मिकता भी महत्वपूर्ण होती जा रही है (बर्जर, 2014, अम्मरमैन, 2014)। यह पता लगाने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है कि ये रुझान कैसे विकसित होते रहते हैं, विशेष रूप से भारत जैसे विविध और तेजी से बदलते समाजों में।

6. निष्कर्ष

यह अध्ययन आधुनिक समाज में सामाजिक जीवन को आकार देने में धार्मिक विश्वासों की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करता है। निष्कर्ष बताते हैं कि धर्म सामाजिक सामंजस्य के लिए एक शक्तिशाली शक्ति बना हुआ है, जो व्यक्तियों के बीच समुदाय और समर्थन की भावना को बढ़ावा देता है। आधुनिकता और धर्मनिरपेक्षता के प्रभाव के बावजूद, धर्म सामाजिक व्यवहार, पहचान और समूह की गतिशीलता को गहन तरीकों से प्रभावित करना जारी रखता है। शोध इस बात पर प्रकाश डालता है कि धार्मिक विश्वास सामाजिक सामंजस्य को कैसे प्रभावित करते हैं, इसे आकार देने में जनसांख्यिकीय कारक, जैसे आयु, लिंग और जातीयता, महत्वपूर्ण हैं। ये कारक सामाजिक जीवन पर धर्म के प्रभाव में परिवर्तनशीलता को रेखांकित करते हैं, यह सुझाव देते हुए कि धर्म की भूमिका विभिन्न सामाजिक समूहों में एक समान नहीं है। इसके अलावा, अध्ययन इंगित करता है कि जबकि धार्मिक पहचान सामाजिक जुड़ाव और नागरिक भागीदारी को बढ़ावा देती है, सहसंबंध उतना मजबूत नहीं है जितना कि शुरू में अनुमान लगाया गया था, जो धर्म और सामाजिक भागीदारी के बीच जटिल संबंधों की आगे की खोज की आवश्यकता की ओर इशारा करता है। अंत में, विभिन्न धार्मिक समूहों के बीच सामाजिक

जीवन पर धर्म के प्रभाव में महत्वपूर्ण अंतर यह सुझाव देते हैं कि धर्म की भूमिका सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और भौगोलिक संदर्भों में गहराई से अंतर्निहित है। निष्कर्षतः, धर्म सामाजिक जीवन का एक अनिवार्य पहलू बना हुआ है, लेकिन इसका प्रभाव बदलते सामाजिक और जनसांख्यिकीय कारकों से प्रभावित होता है, जिसके लिए समकालीन समाज में इसकी भूमिका की अधिक सूक्ष्म समझ की आवश्यकता है।

संदर्भ

1. आब्दी, ए.ए. (2012). केन्या में जातीयता, राजनीति और समाजः एक अंतःविषयक विमर्श। जर्नल ऑफ थर्ड वर्ल्ड स्टडीज, 29(1), 43–62.
2. एजेन, आई. (1985). इरादों से लेकर कार्यों तकः नियोजित व्यवहार का एक सिद्धांत। जे. कुहल और जे. बेकमैन (संपादक), एक्शन कंट्रोलः संज्ञान से लेकर व्यवहार तक (पृष्ठ 11–39)। स्प्रिंगर।
3. ऑलकॉट, एच., और जेंट्जकोव, एम. (2017)। 2016 के चुनाव में सोशल मीडिया और फर्जी खबरें। जर्नल ऑफ इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स, 31(2), 211–236।
4. अम्मरमैन, एन.टी. (2014)। पवित्र कहानियाँ, आध्यात्मिक जनजातियाँः रोजमर्रा की जिंदगी में धर्म की खोज। ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
5. बर्गर, पी.एल. (2014). आधुनिकता की अनेक वेदियाँः बहुलतावादी युग में धर्म के प्रतिमान की ओर। डी ग्रुइटर।
6. ब्रेटश्नाइडर, सी. (2012). जब राज्य बोलता है, तो उसे क्या कहना चाहिए? लोकतंत्र अभिव्यक्ति की रक्षा कैसे कर सकता है और समानता को कैसे बढ़ावा दे सकता है। प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
7. चौडविक, ए. (2017). हाइब्रिड मीडिया सिस्टमः राजनीति और शक्ति. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.

8. चेस्टनट, ए.आर. (2012). प्रतिस्पर्धी भावनाएँः लैटिन अमेरिका की नई धार्मिक अर्थव्यवस्था. ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस.
9. एलिस, एस., और टेर हार, जी. (2017). अफ्रीका में धर्म और विकास, विश्व विकास, 99, 311–321.
10. हैकेट, सी., ग्रिम, बी.जे., स्टोनॉवस्की, एम., स्किरबेक, वी., और पोटान्कोकोवा, एम. (2014)। विश्व धर्मों का भविष्यः जनसंख्या वृद्धि अनुमान, 2010–2050। प्यू रिसर्च सेंटर।
11. जोन्स, एच. (2019)। ब्रेक्सिट और ब्रिटिशः हम खुद को कौन समझते हैं? ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 70(4), 924–945.
12. कोएनिग, एच.जी. (2015)। धर्म, आध्यात्मिकता और स्वास्थ्यः एक समीक्षा और अद्यतन। माइंड–बॉडी मेडिसिन में प्रगति, 29(3), 19–26।
13. लॉरेंस, जे., और हीथ, ए. (2014)। सामुदायिक सामंजस्य के पूर्वानुमानः 2005 के नागरिकता सर्वेक्षण का बहु–स्तरीय मॉडलिंग। जर्नल ऑफ एथनिक एंड माइग्रेशन स्टडीज, 34(4), 637–666।
14. लुईस, वी.ए., मैकग्रेगर, सी.ए., और पुटनाम, आर.डी. (2013)। धर्म, नेटवर्क और पड़ोसीः नागरिक सहभागिता पर धार्मिक सामाजिक नेटवर्क का प्रभाव। सामाजिक विज्ञान अनुसंधान, 42(2), 331–346।
15. मोडूद, टी. (2012). आप्रवास के बाद का 'अंतर' और एकीकरणः पश्चिमी यूरोप में मुसलमानों का मामला, ब्रिटिश जर्नल ऑफ सोशियोलॉजी, 63(2), 245–264.
16. नाकामुरा, के. (2017). जापानी समाज में सामाजिक अनुरूपता और सामाजिक सामंजस्य, एशियन जर्नल ऑफ सोशल साइंस, 45(1–2), 12–28.
17. ओगिहारा, वाई., और उचिदा, वाई. (2014)। क्या व्यक्तिवाद खुशी लाता है? पारस्परिक संबंधों और खुशी पर व्यक्तिवाद के नकारात्मक प्रभाव। फ्रंटियर्स इन साइकोलॉजी, 5, 135।

18. पुटनाम, आर.डी. (2000). अकेले गेंदबाजीः अमेरिकी समुदाय का पतन और पुनरुद्धार, साइमन और शूस्टर।
19. पुटनाम, आर.डी. (2015). हमारे बच्चेः संकट में अमेरिकी सपना, साइमन और शूस्टर।
20. पुटनाम, आर.डी., और कैम्पबेल, डी.ई. (2012)। अमेरिकी अनुग्रहः धर्म हमें कैसे विभाजित और एकजुट करता है। साइमन और शूस्टर।
21. रिबेरो, ए.सी., और टेल्स, ई.ई. (2016)। दूसरे अमेरिका में नस्लः ब्राजील में त्वचा के रंग का महत्व। सोशल फोर्सेस, 95(3), 909–944।
22. सीकिंग्स, जे. (2014). दक्षिण अफ्रीकाः 1994 से लोकतंत्र, गरीबी और समावेशी विकास। जर्नल ऑफ कंटेम्पररी अफ्रीकन स्टडीज, 32(3), 295–314.
23. स्मिथ, सी.एस. (2018)। संयुक्त राज्य अमेरिका में विविधता और बहुसंस्कृतिवादः एक अवलोकन। जर्नल ऑफ मल्टीकल्चरल रिसर्च, 23(2), 145–168।
24. ताजफेल, एच., और टर्नर, जे.सी. (1979)। अंतर–समूह संघर्ष का एक एकीकृत सिद्धांत। डब्ल्यू.जी. ऑस्टिन और एस. वोरचेल (संपादक), अंतर–समूह संबंधों का सामाजिक मनोविज्ञान (पृष्ठ 33–47)। ब्रूक्स/कोल।
25. यामागिशी, टी., और यामागिशी, एम. (2018)। संयुक्त राज्य अमेरिका और जापान में विश्वास और प्रतिबद्धता। प्रेरणा और भावना, 42(2), 226–236।
26. येस्सेल्डिक, आर., मैथेसन, के., और एनिसमैन, एच. (2013)। पहचान के रूप में धार्मिकताः सामाजिक पहचान के नजरिए से धर्म की समझ की ओर। व्यक्तित्व और सामाजिक मनोविज्ञान समीक्षा, 14(1), 60–71।